M. A. Semester - I
Philosophy - CC - 03

Prof. (Dr.) Ragini Kumari
Prof. & Head
P. G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

## Aristotle's Criticism of Plato's Theory of Ideas.
### ( Part - III )

इसके बाद Aristotle का कहना है कि Plato के दर्शन में विज्ञानों अर्थात् सामान्यों को व्यक्तियों के प्राण, जीवन और आत्मा, स्वरूप एवं तत्व माना गया है। अब यदि ऐसा है तो यहाँ पर एक समस्या उठती है कि फिर ये सामान्य व्यक्तियों से पृथक एक दूसरे ही लोक में कैसे रह सकते हैं? इसलिए Aristotle कहता है कि तब फिर यह कहना कि व्यक्ति इन सामान्यों के प्रतिरूप, प्रतिकृति, प्रतिबिम्ब, प्रतिलिपि इत्यादि हैं या इनमें भाग लेते हैं, काव्य कल्पना मात्र है।

फिर Aristotle का कहना है कि Plato ने अपने दर्शन में माना है कि उसके विज्ञान नित्य हैं, परिणामी और गतिशून्य हैं और इस प्रकार जगत के अन्दर जो गति, परिवर्तन इत्यादि पाये जाते हैं इनके सम्बन्ध में अरस्तू का कहना है कि विज्ञान उनकी व्याख्या करने में सर्वदा असमर्थ है। अब यदि सामान्यों के कारण ही सांसारिक वस्तुओं की सत्ता और उनका ज्ञान सम्भव है तो परिवर्तन और गति असम्भव हो जाएगी। Plato के निर्जीव और गतिशून्य विज्ञानों में हमें गति-सिद्धान्त का कहीं आभास भी नहीं मिलता, इसलिए यह कहा जा सकता है कि विज्ञान इस जगत के परिवर्तन तथा गति का कोई उचित समाधान नहीं कर सकते।

फिर एक अन्य महत्वपूर्ण आलोचना यह की जाती है कि Plato जिन्हें सामान्य कहता है, वह

सामान्य में ... सांसारिक व्यक्ति हैं तथा ये काल्पनिक दिव्य व्यक्ति हैं। इसे हम एक उदाहरण से स्पष्ट कर सकते हैं। यदि वस्तुजगत के किसी एक व्यक्ति उदाहरणार्थ Socrates को ले लिया जाए तो Socrates इस लोक का व्यक्ति है, किन्तु उसका मौलिक रूप विज्ञान लोक में सामान्य मानव एक दिव्य व्यक्ति है उसका Socrates से कोई सम्बन्ध नहीं है, किन्तु ये हैं दोनों मनुष्य, एक लौकिक है तथा दूसरा दिव्य। अतः इन दोनों मनुष्यों में अनुगत और इन दोनों को मनुष्य का धर्म देनेवाले एक तृतीय मनुष्य (Third man) की कल्पना करनी पड़ेगी, जो वस्तुतः इन दोनों का सामान्य हो, किन्तु अरस्तू के अनुसार यह सामान्य भी एक व्यक्ति विशेष हो जाएगा और इसके लिए एक और सामान्य खोजना पड़ेगा और इस प्रकार हम "अनावस्था दोष" में पड़ जायेंगे। Plato की आलोचना करने के सन्दर्भ में Aristotle ने कहा है कि — Plato ने अपने सामान्यों को व्यक्तियों से पृथक करके ~~उनको~~ उनको सामान्य पद से गिरा दिया है और वे व्यक्ति विशेष हो गये हैं। Plato ने व्यक्ति और सामान्य का भेद ही नष्ट कर दिया है इसलिए उनके सिद्धान्त में अनावस्था दोष का आना अनिवार्य हो गया है।

Plato के 'विज्ञानवाद के विरुद्ध Aristotle का सबसे महत्वपूर्ण तर्क है कि Plato ने विज्ञानों को वस्तुओं का सार तत्व माना है, परन्तु फिर भी उनको उसने वस्तुओं से पृथक कर दिव्य लोक में स्थान दिया है। वस्तु स्थिति में वस्तुओं के सार तत्व को वस्तुओं के बाहर न होकर उनके भीतर होना चाहिए। इसलिए Aristotle का यह आक्षेप है कि Plato ने विज्ञान को जो वस्तुओं के सारतत्व हैं ...

अलग करके उनके स्वरूप को भी प्रकट कर दिया है।

**समीक्षा** → इस प्रकार हम पाते हैं कि Aristotle ने अपने गुरु Plato के विज्ञान धारणा को भरपूर आलोचना करने से बाज नहीं आया। परन्तु, अब प्रश्न उठता है कि वस्तु स्थिति में अरस्तू की ये आलोचनाएँ न्यायसंगत है अथवा नहीं? Aristotle ने जो Plato का खण्डन प्रस्तुत किया है, अपने उस खण्डन में उसने Plato के साथ पूर्ण न्याय नहीं किया। इसे तो नहीं माना जा सकता है कि Aristotle, Plato के विज्ञानवाद को समझा ही नहीं है और अच्छी तरह नहीं समझ सकने के कारण भ्रमवश उसकी गलत आलोचनाएँ कर बैठा है। यह अवश्य सत्य दृष्टिगत होता है कि Aristotle ने केवल खण्डन के लिए Plato के सिद्धान्त की कुछ महत्वपूर्ण तत्वों की उपेक्षा कर दी है और कुछ का अतिरंजन किया है। Plato ने अपनी प्रारम्भिक कृतियों में Socrates का अनुकरण करके यह लिखा है कि सांसारिक पदार्थ इन सामान्यों में भाग लेते हैं या उनके प्रतिबिम्ब (copy) हैं किन्तु बाद में स्वयं Plato ने अपने (पार्मेनाइडीज) नामक कृति में इसका संशोधन करके जगत के पदार्थों को विज्ञानों की अभिव्यक्ति माना है, जिसपर Aristotle ने कोई ध्यान नहीं दिया है। Aristotle को प्रायः सभी आक्षेपों को Plato स्वयं उपस्थित करके उनका उत्तर दे दिया है।

Plato के सामान्य या विज्ञान वस्तु जगत के परे केवल इस अर्थ में है कि वे वस्तु जगत पर निर्भर नहीं हैं। 'परे' 'ऊपर' का अर्थ उनकी स्वतन्त्र सत्ता है न कि भौतिक दृष्टि से ऊपर या दूसरे लोक में रहना। विज्ञान को Plato दिक, कालातीत माना है अतः उनके 'ऊपर' और 'नीचे', 'बाहर' और 'भीतर' रहने का कोई सवाल ही नहीं उठता और फिर Plato ने स्वयं ही विज्ञानों को वस्तुओं में अनुगत,

अनुभूत या अन्तर्यामी भी माना है। विज्ञानलोक वस्तुलोक से पूर्णतः भिन्न और स्वतन्त्र नहीं है।

जहाँ तक परिवर्तन और 'गति' का प्रश्न है वह वस्तु जगत के परिवर्तन और गति के कारण Plato ने ईश्वर को माना है और हम पाते हैं कि Aristotle ने अपने खण्डन संदर्भ में कहीं नाम भी नहीं लिया है। Plato ने विज्ञान को एक परम विज्ञान माना है। जिसे वह शिवत्व विज्ञान (Ideas of good) कहता है, जो सब विज्ञानों का सूत्रात्मक है और सब में अन्तर्यामी है। इस परम विज्ञान की ज्योति विज्ञानों में आती है और उनके द्वारा सांसारिक पदार्थों में। Plato ने संसार को कभी भी असत् नहीं कहा और न वस्तु जगत् और विज्ञान जगत् के विभाग को पारमार्थिक-द्वैत ही माना है।

निष्कर्ष — उपर्युक्त तर्क-विवेक से यह पाया जाता है कि Aristotle ने अपने भरसक प्रयासों द्वारा Plato के विज्ञानवाद को खण्डित करने का प्रयास किया, किन्तु महत्त्वपूर्ण रूप से उल्लेखनीय बात यह है कि ऐसा लगता है कि अपने इस प्रयास में वे एकमात्र इस लक्ष्य से परिलक्षित रहे हैं कि Plato के विज्ञानवाद को खण्डित करते हुए उसी के आधार पर अपने इस लक्ष्य पूर्ति में इतने स्वार्थी बन गये कि उन्होंने जानबूझकर Plato के कई महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों की ओर ध्यान नहीं दिया, जैसे कि Plato सांसारिक परिवर्तन या गति का कारण ईश्वर को मानता है और Aristotle ने विज्ञान का खण्डन करते समय ईश्वर का नाम तक नहीं लिया और वह ले भी कैसे सकता था? उसके अनुसार भी तो गति का कारण ईश्वर ही है। Aristotle का unmoved mover Plato के Idea of good से भिन्न नहीं है और Aristotle अपने खण्डन संदर्भ में Idea of the good का कहीं उल्लेख तक नहीं करता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि Aristotle की आलोचनाएँ न्यायोचित नहीं हैं तथा वे एकांगी एवं महत्त्वपूर्ण हैं।

x———————x